सिल्वी व्यालयाल

यूसिके के सात दोस्त

सिल्वी व्यालयाल

यूसिके के सात दोस्त

नन्हे यूसिके को इतवार का दिन सबसे अच्छा लगता था। इतवार को कोई काम तो होता नहीं, बस सुबह से शाम तक जितना चाहो खेलो, मौज-मस्ती करो! यूसिके चाहता था कि ऐसा हमेशा हो। इसलिए उसने फ़ैसला किया कि वह इतवार के देश में जाकर उससे हर रोज़ आने को कहेगा।

यूसिके सोचता था कि सब दिन उस जंगल के पीछे रहते हैं, जहां जाकर सूरज हर शाम छिप जाता है और दूसरी सुबह अपने साथ नया दिन लाता है। यूसिके सूरज के पीछे-पीछे चलने लगा।

चलते-चलते वह एक घने जंगल में पहुंचा। यहां सूरज बिल्कुल नहीं दिखायी दे रहा था। यूसिके पूरी ताक़त से दौड़ने लगा, ताकि सूरज कहीं आगे न निकल जाये। मगर जंगल का कोई अन्त ही नहीं था। इस तरह यूसिके को पता भी न चल पाया कि सूरज कहां छिप गया है।

चलते-चलते वह एक बड़ी सी बांबी के पास पहुंचा। शाम हो गयी थी और चींटियां अपने घर के दरवाज़े बंद कर रही थीं।

"चींटी रानियो, तुम नहीं जानती कि इतवार कहां रहता है?" यूसिके ने पूछा।

"हम इस जंगल का तो चप्पा-चप्पा जानती हैं, मगर इतवार का देश हमने कभी नहीं देखा," चींटियों ने जवाब दिया। "फुदकी के पास जाओ। हो सकता है कि उसे मालूम हो।"

यूसिके फुदकी के पास पहुंचा। वह घोंसले के किनारे पर बैठी अपने बच्चों को लोरी सुना रही थी।

"नमस्ते, नन्ही फुदकी! तुझे मालूम है कि इतवार कहां रहता है?"

"नहीं," फुदकी ने जवाब दिया। "हालांकि मैं अपने नन्हों के लिए खाना इकट्ठा करने के वास्ते दिन भर उड़ती रही हूं, मगर इतवार का देश कहीं नहीं दिखायी दिया। हो सकता है कि बड़े बलूत के कोटर में रहनेवाला उल्लू जानता हो। उल्लू बहुत बुद्धिमान है, सब कुछ सुनता रहता है और यहां तक कि रात में भी देखता है।"

यूसिके उल्लू के पास पहुंचा।

"उल्लू महाराज, प्रणाम। आप मुझे बता सकते हैं कि इतवार कहां रहता है?"

उल्लू दिन भर सोता रहा था और चूंकि शाम हो आयी थी, इसलिए अभी-अभी उठा था।

"इतवार का देश यहां से अभी बहुत दूर है," उल्लू ने जवाब दिया। "मगर तुम निडर होकर आगे बढ़ते जाओ और सोमवार के देश में पहुंचोगे। सोमवार मेहनतपसंद और मिलनसार है। वह तुम्हें रास्ता ज़रूर बता देगा।"

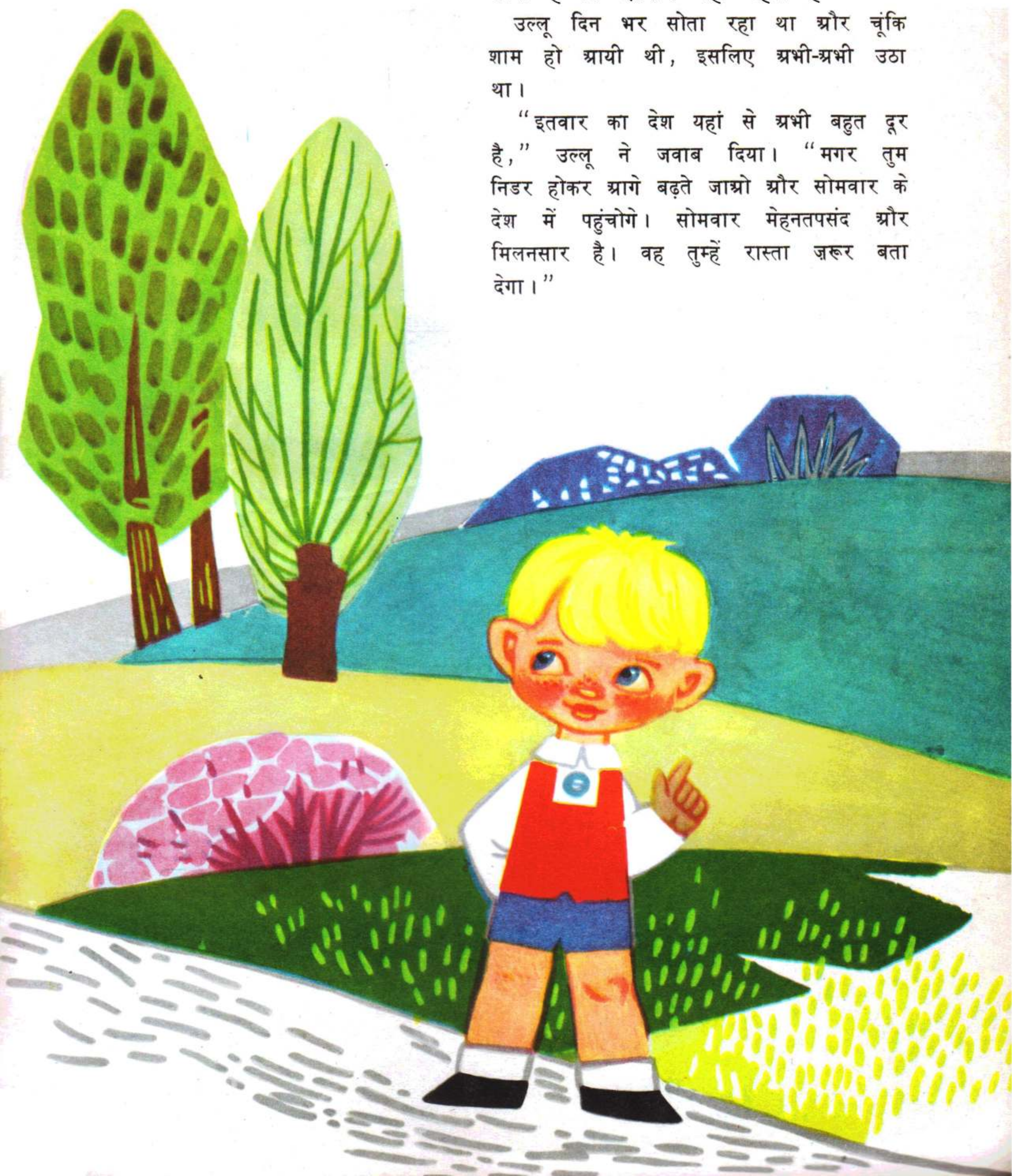

मालूम नहीं, रास्ता लंबा था या छोटा, यूसिके आख़िरकार सोमवार के देश तक पहुंच ही गया।

"नमस्ते, सोमवार!" यूसिके ने कहा। "इतवार के देश का रास्ता कौनसा है?"

"नमस्ते, यूसिके!" सोमवार ने जवाब दिया। "इतवार के देश तक पहुंचने में छह दिन लगते हैं। मैं तुम्हें रास्ता तो दिखा दूंगा, पर पहले घास इकट्ठी करने में मेरी मदद कर दो।"

यूसिके राज़ी हो गया। उसने और सोमवार ने मिलकर शाम तक ढेर सारी सौंधी-सौंधी घास इकट्ठी कर ली। सोमवार ने मेहनत के साथ काम करने के लिए यूसिके की तारीफ़ की और मंगलवार की ओर जानेवाला रास्ता बता दिया।

चलते-चलते यूसिके मंगलवार के देश में पहुंचा। मंगलवार काम पर जाने की तैयारियां कर रहा था।

"नमस्ते, मंगलवार! क्या तुम मुझे इतवार के देश का रास्ता बता सकते हो?"

"इतवार के देश तक पहुंचने में पांच दिन लगते हैं। रास्ता तो मैं बता दूंगा, मगर पहले नया बालोद्यान बनाने में मेरी मदद कर दो।"

दोनों ने जमकर काम किया और जब बालोद्यान तैयार हो गया, तो मंगलवार ने यूसिके को बुधवार के देश तक जाने का रास्ता दिखा दिया।

"नमस्ते, बुधवार! कृपा करके मुझे इतवार के देश का रास्ता बता दो।"

लेकिन बुधवार भी काम में फंसा हुआ था: बछड़ा बाड़े से निकलकर भाग गया था और पकड़ ही में नहीं आ रहा था।

"पहले मुझे इस शैतान को पकड़ने में मदद करो," परेशान बुधवार ने यूसिके से कहा। "बातचीत बाद में होगी।"

दोनों ने नन्हे भगोड़े को जल्दी ही पकड़ लिया। बुधवार ने यूसिके की चुस्ती की तारीफ़ की और कहा :

"इतवार तक पहुंचने में तुम्हें चार दिन और लगेंगे। तुम बृहस्पतिवार के यहां जाओ। वह इस रास्ते को बेहतर जानता है।"

बृहस्पतिवार थोड़ी ही दूरी पर रहता था। वह अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा मानो यूसिके का ही इन्तज़ार कर रहा था।

"नमस्ते, यूसिके!" उसने कहा। "मैंने सुना है कि तुम बहुत बढ़िया लड़के हो और हर किसी की मदद करते हो। ज़रा मेरी भी मदद कर दो। बस इन क्यारियों की निराई करनी है और फूलों में पानी डालना है।"

यूसिके को पहले तो ऐसा काम खास पसंद नहीं आया। मगर जब फूल अपने सिर हिलाने लगे, मानो उसे धन्यवाद दे रहे हों, तो उसने महसूस किया कि बाग़ में काम करना भी कोई बुरी बात नहीं है। बृहस्पतिवार तो ऐसा मददगार पाकर खुशी से उछल ही पड़ा। उसने यूसिके को बताया कि इतवार तक पहुंचने में बस तीन दिन और लगेंगे और फिर वह उसे रास्ते तक छोड़ भी आया।

जल्दी ही यूसिके शुक्रवार के देश में पहुंच गया। संयोग की बात कि शुक्रवार को उस दिन ढेर सारे कपड़े धोने थे। यूसिके को धुलाई मशीन का हैण्डल घुमाना हमेशा अच्छा लगता था, इसलिए वह शुक्रवार के कहे बिना ही काम में जुट गया और शीघ्र ही सब कपड़े धुलकर तैयार हो गये।

शुक्रवार ने उसे बताया कि इतवार के देश तक पहुंचने के लिए दो दिन की यात्रा और बाक़ी रह गयी है।

यूसिके जब शनिवार के यहां पहुंचा, तो पाया कि काम के मारे उसे एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं थी।

"नमस्ते, शनिवार! इतवार के देश जाने का रास्ता कौन सा है?

"अभी एक दिन और लगेगा," शनिवार ने जवाब दिया। "पहले मुझे घर की सफ़ाई और हमाम तक लकड़ियां पहुंचाने में मदद कर दो। ज्यों ही काम ख़त्म हो जायेगा, मैं रास्ता दिखा दूंगा।"

यूसिके उत्साह के साथ काम में जुट गया। जल्दी ही घर की सफ़ाई हो गयी, हमाम में लकड़ियां पहुंचा दी गयीं। बाद में यूसिके ने ख़ुद भी हमाम में स्नान किया। आख़िरकार वह इतवार के यहां गंदी हालत में तो नहीं जा सकता था!

इतवार के देश में सब कुछ बहुत सुंदर था। और फिर खुद इतवार की सुंदरता का तो कहना ही क्या! जल्दी ही दूसरे मेहमान भी पहुंच गये। ये हफ़्ते के दूसरे दिन थे, जिन्हें यूसिके जानता था। इतवार ने उनकी तारीफ़ की और कहा कि उसके देश में अच्छा उनको ही लगता है, जिन्होंने हफ़्ते भर जी लगाकर काम किया है। तब सभी दिनों ने एक स्वर से बताया कि अगर यूसिके उनकी मदद न करता तो कोई भी अपना काम पूरा न कर पाता।

यूसिके को यह बात बहुत भायी। वह सबके साथ मिलकर नाचने-गाने लगा और इतवार से कहना ही भूल गया कि वह हर रोज़ आया करे। अब सभी दिन उसके दोस्त बन गये थे।

© चित्र और हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७७

सोवियत संघ में मुद्रित

अनुवादक: बुद्धिप्रसाद भट्ट
चित्र लेखक द्वारा

С. Вяльял

СЕМЬ ДРУЗЕЙ

На языке хинди

प्रगति प्रकाशन

मास्को

В $\frac{70802-615}{014(01)-77}$ 664-77